Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 6.280, Volume 11, No. 01, January-March 2021, pp. 115-118

उस्ताद मंसूर द्वारा चित्रित पशु–पक्षी चित्रण में संयोजन के तत्व

डॉ. रीतिका गर्ग*
दीबा खान**

lkj

भारतीय चित्रकला में मुगल लघुचित्रशैली एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। मुगल सम्राटों ने अपनी –अपनी रूचियों के अनुरूप कला को आगे बढाया। अकबर के काल में चित्रकला के क्षेत्र में विकास प्रांरभ हुआ जो जहाँगीर काल में चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया। जहाँगीर के हृदय में पशु–पक्षियों के लिए प्रेम के भाव उमड़ते थे तथा वे उनका चित्रण करवाने के लिये सदैव आतुर रहता था। इस समय के पशु–पक्षी चित्रण में दर्शायी बारीकी और लयात्मकता तूलिका के सही प्रयोग पर ही निर्भर थी जिसमें मुगल कलाकारों का विशेष योगदान रहा। इन चित्रों में कलाकारों ने मात्र बाहरी आकृति को ही नहीं निखारा अपितु उनके भीतरी मनोभावों को भी दृष्टव्य किया है, जो वास्तव में इन कलात्मक तत्वों के ज्ञान के अभाव में संभव नहीं था। मुगलकालीन ये पशु–पक्षी चित्र कलात्मक दृष्टि से बहुत वैभवशाली व विभिन्न गुणों से युक्त हैं। कलाकार ने इन चित्रात्मक ततवों रेखा, रूप, रंग, तान, पोत व अन्तराल आदि का प्रयोग कुशलता से किया है। एक सामान्य व्यक्ति कला के भौतिक गुणो को ही समझ पाता हैं, परन्तु यदि उसे इन कलात्मक तत्वों का भी ज्ञान हो जाए तो वह पूर्णतः उन चित्रों से आनन्द प्राप्त कर सकेगा।

e[; 'kCn% मुगल चित्रशैली ,कलात्मक तत्व, पशु–पक्षी, जहाँगीर।

———————

iLrkouk

भारतीय चित्र संसार में मुगलशैली का अविस्मरणीय एंव बहुमूल्य स्थान हैं जिसके साक्ष्य इस कला के परिष्कार तथा कूची के कोमल स्पर्श द्वारा तत्काल पहचान लिये जाते हैं। इस युग में चित्रकला के क्षेत्र में कई नवीन प्रयोग प्रारम्भ हुए, अकबर की मुत्यु उपरान्त जहाँगीर के राज्याभिषेक के पश्चात् ही चित्रकला अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई। मुगलचित्रकला के लिये जहाँगीर का युग ''स्वर्ण–युग''साबित हुआ, इस काल में पाण्डुलिपियों की तुलना में लघुचित्रों को अधिक महत्व मिला। जहाँगीरकालीन कलाकारों ने चित्रों के बाह्य सौन्दर्य के साथ–साथ कलात्मक तत्वों का भी बखूबी प्रयोग किया। इस समय की रेखाएं बारीक, कोमल, प्रवाहपूर्ण व सजीव हैं, रंगो का प्रयोग जिस ढंग से किया गया वह अपूर्व था जिसमें गुलाबी, सफेद, सोने तथा चाँदी के रगों की अधिकता हैं। पशु–पक्षियों के रूपाकारों में यथार्थता हैं, आकृतियों में प्रयुक्त छाया–प्रकाश के द्वारा तान का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता हैं, इसी के साथ मुगल कलाकारों ने पोत का प्रभाव पक्षियों के पंखों को बारीकी से निरूपित करके परिलक्षित किया हैं, अन्तराल के प्रयोग में कलाकारों ने कुशलता का प्रयोग कर विभिन्न विषयों को साकार किया हैं। कलाकार ने चित्रतल का विभाजन इस प्रकार किया कि एक ही तल पर हम नदी, आकाश, पहाड़ी एंव वृक्षों के सौन्दर्य को देख सकते हैं, सम्पूर्ण चित्र में आकारों का संयोजन इस प्रकार किया गया कि दर्शक का ध्यान मुख्य आकृति पर ही केन्द्रित रहे।

* सहायक आचार्य, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोधार्थी, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

पशु–पक्षियों का चित्रण इस समय सर्वाधिक हुआ क्यूँकि जँहागीर की पशु–पक्षियों के जीवन में विशेष रूचि थी। जँहागीर ने अपनी आत्मकथा तुजक–ए–जँहागीरी में कई ऐसे जीवों का उल्लेख किया हैं जो उसको रूप–रंग या स्वभाव की दृष्टि से विलक्षण एंव नवीन प्रतीत हुये तथा कई अवसरों पर उसने अपने चित्रकारों को उनकी छवि तैयार करने का आदेश भी दिया[1] जिसमें उस्ताद मंसूर द्वारा चित्रित पशु–पक्षी के चित्र विशिष्ट रूप से प्रसिद्व हैं। मसूंर जहाँगीर के समय राज दरबार में पशु–पक्षी को चित्रित करने वाला सर्वश्रेष्ठ चित्रकार रहा है। उसका बनाया चित्र"टर्की कोक" व "बाज " संसार प्रसिद्व हैं।[2] इन चित्रों के निर्माण में कलाकारों ने संयोजन के तत्वों (रेखा,रूप,रंग, तान, पोत व अन्तराल)आदि का कुशलता से प्रयोग किया जिसका विवरण इस प्रकार हैं–

- Vdh dkd–उस्ताद मंसूर द्वारा चित्रित यह चित्र विशेष प्रसिद्व है। चित्रकार ने इस कॉक का अधिकांश भाग छोटी–छोटी रेखाओं से युक्त बनाया है जिसमें एक लयात्मकता दिखाई देती है। कोक के पीछे का भाग मोर पंख के समान अंकित होने के कारण अत्यन्त आकर्षक प्रतीत होता है। पैरों के भाग में कोणीय रेखा व चोंच त्रिभुजाकार रेखा में अंकित की गयी है। पक्षी के चोंच से गर्दन तक का भाग लाल रंग में होने के कारण सबसे ज्यादा प्रभावित करता हैं व पक्षी के शरीर के मध्य भाग को गोलाकार रूप में भूरे वर्ण की तानों में बनाया गया है। कॉक की पीठ की बनावट उभरी हुई प्रतीत होती हैं जिसमें छोटी–छोटी रेखाओं द्वारा पंखों की बनावट सराहनीय है। कलाकार ने चित्र के अन्तराल को अग्रभूमि, मध्यभूमि व पृष्ठभूमि में बांटा है, मुख्य विषय को चित्र के मध्य भाग में चित्रित किया गया हैं। चित्र के पृष्ठ भाग को सपाट हल्के पीले वर्ण द्वारा चित्रित करके भूमि का प्रभाव दर्शाया है जो सहायक अन्तराल का काम कर रहा है। चित्र की अग्रभूमि में फूल–पत्तियों का अकंन चित्रकार ने सुंदरता से किया हैं।

fp™k l[;k 1% þVdÊ d¨dß] tgkxhj dky] mLrkn elj]
foDVkfj;k ,.M ,YcV lxgky;] 1612] ynu] 13-2×13cm

- tcjk–जहाँगीरकालीन ये चित्र विक्टोरिया एण्ड एल्बर्ट संग्रहालय, लन्दन में संग्रहीत हैं जो 1621 ईं. उस्ताद मंसूर द्वारा निर्मित किया गया था,[3]इस समय में कलाकार ने जेबरा की आकृति को श्वेत व श्याम रंग से चित्रित किया है जिसमें रेखाओं का विचरण बहुत सुंदर दिखाई देता है। रेखाओं द्वारा पूरे शरीर पर जो धारियँा चित्रित हैं वह इसे अनोखा बनाती है। कलाकार ने जेबरा के कमर का भाग लहरदार रेखाओं द्वारा मोटी धारियों युक्त बनाया हैं व पूँछ तथा पैरों में ये रेखायें पतली हो गयी है, आगे के पैर लम्बवत् तथा पीछे के पैर कोणीय रेखा में मुडे हुये प्रतीत होते है। जेबरा के शरीर पर श्वेत व काले रंग की धारियों का अंकन पोत की कमी को पूरा कर रहा है। चित्र को कलाकार ने अग्रभूमि व पृष्ठभूमि में विभाजित किया है।

अंग्रभाग में जेबरा को लकडी के खूँटे से बँधा हुआ दर्शाया है व पृष्ठभूमि को गुलाबी रंग की तान द्वारा सपाट चित्रित किया है। चित्र के चारों ओर हाशियों पर फूल –पत्ती को सुनहरे रंग द्वारा अंकित किया गया है।

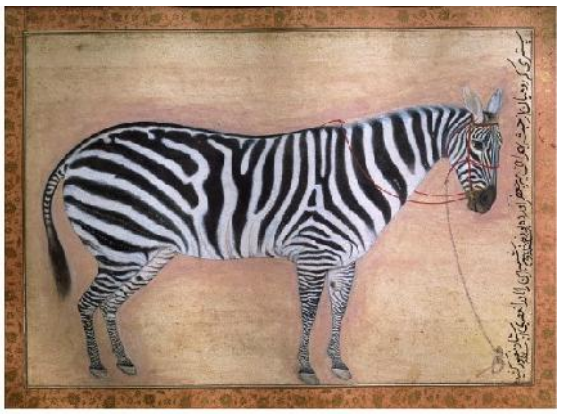

fp™k l[;k 2½ þtcjkß] tgkxhj dky] mLrkn eal¡j]
foDVkfj;k ,.M ,YcVZ lxzgky;] 1621] yUnu] 18-1×24-1cm

- lkjl dk tkMk– मसूंर द्वारा बनाये इस चित्र में एक सारस को सीधा खडा हुआ तथा एक को झुका हुआ निर्मित किया हैं जिसके पैरों की मुद्रा कोणीय रेखा में दिखायी गयी है व चोंच त्रिभुजाकार आकृति में बनाई गई हैं सारस की गर्दन का भाग (s) आकार में चित्रित हैं व सारस के मध्य का भाग अर्द्वगोलाकार अंकित किया गया है। दोनों सारस की गर्दन तक का भाग काले रंग से व कमर का भाग स्लेटी रंग की तान में निर्मित हैं । उन पर पीले व हरे रंग द्वारा फूल –पत्ती का अंकन है। चित्र को सक्रिय व सहायक अंतराल में विभाजित कर सयोंजित किया गया है। सारस के पृष्ठभाग को पीले रंग की तान द्वारा सपाट अंकित किया गया है व अग्र भाग में नीचे की ओर हरे रंग की तान के प्रयोग से घास का प्रभाव चित्रित किया गया है। सारस की पूँछ पर रेखाओ द्वारा पोत को सृजित करने का प्रयास कलाकार ने बखूबी किया है।

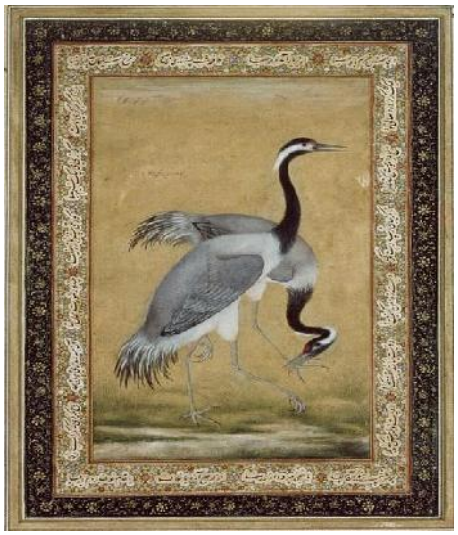

fp™k l[;k 3½ þlkjl dk tkMkß] tgkxhj dky] mLrkn eal¡j]
foDVkfj;k ,.M ,YcVZ lxzgky;] 1621&1625] yUnu] 29-9×11-3cm

- ckt – बाज का चित्र जँहागीर कालीन चित्रों का विख्यात चित्र रहा हैं। मंसूर ने प्रस्तुत चित्र में 'बाज' को तीव्र व अपने लक्ष्य की ओर तत्पर प्रतीक रूप में चित्रित किया है। आँखें गोलाकार तथा चोंच त्रिभुजाकार बनाई गई हैं, पैरो की उंगलियाँ एक पुंजीय आकार में तथा पंख कोणीय रेखा में चित्रित किये गये है। बाज को कलाकार ने धूमिल रंग में अंकित किया है, बाज की आँख में काला रंग ,पैर के पंजों में पीला रंग प्रयोग में लिया गया है। बाज को एक पीले वर्ण के लकडीनुमा स्टैण्ड पर बैठा हुआ चित्रित किया गया है। बाज के पंखो में काले वर्ण द्वारा सूक्ष्म धारियों कों चित्रित कर यथार्थवादी प्रभाव दर्शाया गया है। पंखों के बीच बीच में पोत का सृजन सुन्दर ढंग से किया गया है। चित्र में बाज को सक्रिय अन्तराल में चित्रित किया गया है व सहायक अन्तराल को हल्के वर्णो में सपाट ही रखा गया है जिसके कारण बाज अधिक प्रभावशाली दिखाई पडता है। चित्र को कलाकार ने 29×20.3cmके आकार में संयोजित किया है। चित्र के हाशिये को कलाकार ने सुनहरे वर्ण में चित्रित कर उसके ऊपर फूल –पत्तियों का अंकन किया है।

fp™k l[;k 4% ßcktÞ] tgkxhj dky] mLrkn el j]
yfyr dyk lxgky;] c®LVu 1619] 29×20-3**cm**

v/;;u mÌs';

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्वेश्य उस्ताद मसूंर द्वारा चित्रित पशु–पक्षी चित्रण में संयोजन के तत्वों का अध्ययन कर दर्शकों को चित्र के भीतरी स्वरूप के ज्ञान का अनुभव कराना है। जिसके दर्शक चित्र को देखकर और आनन्द की अनुभूति प्राप्त कर सके। प्रस्तुत शोधपत्र में शोधकार्य के लिये द्वितीयक आँकडो को आधार रूप में लिया गया हैं। इसके अन्तर्गत विभिन्न पुस्तकालयों व संग्रहालयों से मिली पुस्तकों का अध्ययन व संदर्भ ग्रंन्थ को सम्मिलित किया गया है ।

fu"d"k

मुगल लघुचित्र कला में पशु–पक्षियों का अंकन महत्वपूर्ण हैं इस काल में पशु–पक्षियों को यथार्थ व स्वाभाविक चित्रित किया हैं, इन चित्रों द्वारा ये अनुभव होता हैं कि ये कलाकार पहले पशु–पक्षियों का गहन अध्ययन करते होगे।इन चित्रों के द्वारा कलाकारों ने अपनी आन्तरिक मनोभावों को भी चित्रित करने का प्रयास किया है, जो सराहनीय है। संयोजन की दृष्टि से विषय को प्रमुखता देने के लिये इन पशु–पक्षियों को चित्र के मध्य में चित्रित किया गया है।इन चित्रों की रेखाओ में हमें गति देखने को मिलती हैं व चित्रकारों द्वारा प्रकृति में दृष्टव्य रंग–योजना का प्रयोग बहुत अद्भुत हैं।

lUnHk xUFk lph

1 वर्मा, सोमप्रकाश. मुगल चित्रशैली, पंचशील प्रकाशन, जयपुर,1998 पृ स 53
2 अग्रवाल, आर.ए. कला विलास, भारतीय चित्रकला का विवेचन, लॉयल बुक डिपो, मेरठ, 1996 पृ स 143
3 वर्मा, सोमप्रकाश, मुगल चित्रशैली, पंचशील प्रकाशन, जयपुर 1998 पृ स 54

♦❒♦